8 Paper

विज्ञापन

भूमिका →

विज्ञापन तैयार करने से पहले उद्यमी के दिमाग में यह बात स्पष्ट होती है कि उसका उपभोक्ता कौन है? और अपने विज्ञापनों में उद्यमी / विज्ञापन एजेंसी उसी उपभोक्ता समूह को सम्बोधित करती है। उस समूह की रुचि, आदतों एवं महत्वाकांक्षाओं को लक्ष्य करके ही विज्ञापन की भाषा, चित्र एवं अखबार, पत्रिकाओं का चुनाव किया जाता है।

उदाहरण →

जिसका था आपको इन्तजार ... एक क्रीम जो आपकी त्वचा को कमनीय बनाये। ... आपके पति आपको देखते रह जाये।

परिभाषा →

(पाश्चात्य)

- **बैंक बेस्वी** → विज्ञापन मुद्रित, लिखित, उच्चरित अथवा चित्रित विक्रय कला है।

- **एम्बर्ट** → विज्ञापन एक ऐसी विधा है जिसमें विपणन पारम्परिक ढंग से हट कर किया जाता है।

(भारतीय)

- **के. पी. नारायणन** → विज्ञापन का प्रत्यक्ष सम्बंध प्रचार-प्रसार से है।

रेवाशंकर शर्मा → विज्ञापन समाचार पत्र की रीढ़ की हड्डी होता है और कोई भी पत्र विज्ञापन के बिना चल नहीं सकता।

Scanned with CamScanner

महत्व

आज तकनीकी विकास ने दूर विश्व के लोगों को एक-दूसरे के नजदीक ला दिया है। वर्तमान समाज के बाजार प्रधान समाज में उपभोक्तावादी संस्कृति का बोलबाला बढ़ रहा है। ऐसे में उपभोक्ता, समाज और उत्पादन के बीच संबंध स्थापित करने का कार्य विज्ञापन कर रहा है।

1) उत्पादित वस्तु की जानकारी
2) विक्रेता का लाभ
3) बाजार का निर्माण
4) राष्ट्रहित
5) मनोरंजन के लिए उपयोगी
6) जीवनस्तर को ऊँचा करने में सहायक

Scanned with CamScanner

अनुवाद → 8 Paper

DATE :
PAGE No

परिभाषा → किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन 'अनुवाद' कहलाता है। अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होता आया है।

अर्थ ← संस्कृत में अनुवाद शब्द का उपयोग शिष्य द्वारा गुरु की बात के दुहराए जाने, पुनः कथन, आवृति जैसे संदर्भों में किया गया है। संस्कृत के 'वद' धातु से अनुवाद शब्द का निर्माण हुआ है। वद का अर्थ है - बोलना। वद् धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भावबाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद' जिसका अर्थ है - कहने की क्रिया। वाद में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर अनुवाद शब्द बना है जिसका अर्थ है प्राप्ति कथन को पुनः कहना।

अंग्रेजी में अनुवाद का समतुल्य Translation शब्द है। जो अंग्रेजी के Translate का संज्ञा रूप है। Translate शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द 'Translatum' से हुई है जिसका अर्थ है - दूसरी ओर ले जाना।

Scanned with CamScanner

DATE : / 20
PAGE No

अनुवाद के प्रकार

- गद्य-पद्य पर आधारित :-
  - गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, छन्दानुवाद
- साहित्य विधा पर आधारित
  - काव्यानुवाद, नाट्यानुवाद, कथा अनुवाद, अन्य साहित्यिक विधाओं का अनुवाद
- विषय आधारित
  - धार्मिक-पौराणिक साहित्यनुवाद
  - वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री अनुवाद
  - प्रशासनिक अनुवाद
  - संचार माध्यमों की सामग्री का अनुवाद

Scanned with CamScanner

DATE : / 20
PAGE No

करना आवश्यक प्रतीत होता, क्योंकि आधुनिक बंगला काव्य में उनका भी विशेष स्थान है। बंगला काव्य के विद्रोही कवि माने जाते हैं। बंगला समाज में स्वतन्त्र चेतना और विद्रोह की लहर फैल रही थी। नजरूल इस्लाम विद्रोही काव्य की रचना करके इस ज्वाला को अधिक तीव्र किया और इनकी कविता को पढ़कर लगता ही नहीं कि वो एक मुस्लमान कवि हैं। रवीन्द्रनाथ की तरह तेज गति की काव्य धारा विद्यमान है।

Scanned with CamScanner

9-Paper

DATE : / 20
PAGE No

★ बंगला कविता की प्रवृत्तियाँ

1) ~~बंगला काव्य~~

(1) बंगला भाषा के प्रमुख कवि :-

बंगला साहित्य में जो प्राचीन काव्य शैली आ रही थी उस पर आधुनिकता का रंग चढ़ाने वाले पहले कवि हरिश्चन्द्र विद्यासागर हैं। परन्तु उनके शिष्य रंगलाल बंद्योपाध्याय की कविताओं में आधुनिकता की रूपरेखा स्पष्ट देखी जा सकती है। रंगलाल के बाद दीन बंधु मित्र ने काव्य जगत में प्रवेश किया। परन्तु वे कोई महत्वपूर्ण रचना न लिख सके। माइकल मधुसूदन दत्त को आधुनिक बंगला साहित्य का महाकवि माना जाता है। मधुसूदन के पश्चात् कवि विहारी लाल चतुर्वेदी तथा सुरेन्द्र नाथ ने बंगला काव्य जगत में प्रवेश किया। बंगला ~~काव्य~~ साहित्य की काव्यधारा निरंतर प्रवाहित होती रही तथा विभिन्न कवियों ने आधुनिक बंगला काव्य को समृद्ध बनाया।

(2) बंगला साहित्य में प्रचलित रचनाएँ :-

बंगला साहित्य की रचनाओं में शितनाथ द्वारा रचित 'पुष्पमाला', हरचन्द्र घोष द्वारा 'राजतपस्विनी', दिनेश चरण द्वारा 'कवि कहानी', अधार लाल सेन द्वारा 'ललिता सुंदरी'

Scanned with CamScanner

9-Paper

DATE : / 20
PAGE No

बंगला में रविन्द्रनाथ ठाकुर का स्थान

1.) भूमिका ।
2.) रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाएँ ।
3.) काव्य संबंधी दृष्टिकोण (विचारधारा)
4.) जीवन पर विहगंम दृष्टिपात ।
5.) नारी चित्रण ।
6.) प्रकृति चित्रण ।
7.) 19 वीं शति के बाद की कविता ।
8.) उपसंहार
9.) देश भक्ति की भावना ।

लुईस मैकनीस के अनुसार—"रेडियो फीचर किसी गतिविधि का नाटकीय प्रस्तुतीकरण है, किन्तु उसमें लेखक को रिपोर्टर या फोटोग्राफर से कुछ और अधिक होनी चाहिए। उसे अपनी यथार्थ-सामग्री का चयन काफी विवेक से करना चाहिए तथा उसके बाद उसे इस प्रकार नियंत्रित करना चाहिए कि वह एक नाटकीय प्रभाव के अनुरूप हो सके।"

डॉ. उदय नाथ मिश्र की दृष्टि में—"आकाशवाणी की वैज्ञानिक तकनीकों के प्रयोग के साथ रेडियो फीचर तथ्यों एवं सत्यों की ध्वन्यांकित सृजनात्मक कृति है।"

फीचर-लेखन की प्रमुख विशेषताएँ—फीचर में अपेक्षित गुणों की संख्या को लेकर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। कतिपय विद्वान् अच्छे फीचर में चार गुणों की अपेक्षा करते हैं तो कतिपय विद्वान् केवल दो गुणों की। **श्री प्रेमनाथ चतुर्वेदी** ने फीचर के लक्षणों पर विचार प्रकट करते हुए लिखा है—"फीचर स्थिति का सिंहावलोकन ही नहीं करता, वह प्रश्नों के उत्तर भी देता है और अज्ञात का ज्ञान भी कराता है। फीचर मानो किसी घटना की दूरबीन से जाँच करता है। अच्छे फीचर के गुणों की जब हम बात करते हैं, तो उसके मूल चार आधारों पर हमारा ध्यान जाना आवश्यक है। ये हैं—जिज्ञासा, सत्यता, योग्यता और विश्वास।"

दूसरी ओर डॉ. हरिमोहन ने अच्छे फीचर में मुख्यतः दो गुणों—जिज्ञासा व सत्यता को ही मान्यता दी है। परंतु इसके साथ-साथ वे मानवीय भावना, चित्रात्मकता व स्पष्ट विश्लेषण गुणों को भी फीचर में अपेक्षा करते हैं। उनके विचारों के अनुसार स्पष्ट विश्लेषण के अभाव में फीचर दुरूह, विचार-प्रधान तथा निबंध बन जाता है। चित्रात्मकता व मानवीय भावना के अभाव में वह रिपोर्ताज बन जाता है।

चूँकि रेडियो केवल श्रव्य माध्यम है, अतः इसके फीचर की विशेषताएँ अन्य जनसंचार माध्यमों के फीचरों की तुलना में तनिक भिन्न होंगी। रेडियो के लिए फीचर लिखते समय निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए—

1. विषय का चयन—फीचर-लेखन के विषय ऐसे तथ्यों, घटना, प्रसंग अथवा व्यक्ति पर आधारित होते हैं जो कुछ विशिष्ट हैं, सामान्य से परे हैं, स्थायी अथवा तात्कालिक रूप से प्रसिद्धि प्राप्त हैं। कहने का तात्पर्य है कि विशेष विषयों के विशेष पर्वों, अवसरों, आयोजनों पर फीचर तैयार किए जाते हैं। पिछले दिनों आगरा में आकाशवाणी से **'बोलती इमारतें'** नामक फीचर प्रसारित हुआ जो ताजमहल के 350 वर्ष के आयोजन पर तैयार किया गया था।

2. तथ्यपरकता—फीचर में केवल काल्पनिक नहीं होना चाहिए। उसमें पूर्ण विश्वसनीयता होनी चाहिए। इसके लिए पर्याप्त सामग्री जुटानी पड़ती है और इस कार्य को करने के लिए लेखक को एक प्रकार की खोजी पत्रकारिता की भाँति काम करना पड़ता है। यह तभी संभव होता है जब लेखक की दृष्टि पैनी हो, उसमें प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु या स्थिति को गहराई से जानने-समझने की रुचि व क्षमता हो।

3. प्रवाहमयी भाषा एवं बिम्बधर्मिता—इसी स्तर पर फीचर समाचार या सूचना की परिधि से परे हो जाता है, पर साथ ही साहित्य की कहानी नाटक अथवा कविता की परिधि में जाने से भी बचा रहता है। भाषा की दृष्टि से फीचर समाचार से काफी आगे की विधा है। रेडियो फीचर में भाषा की सरलता, सहजता, स्पष्टता के साथ-साथ कलात्मकता, लाक्षणिकता, व्यंजनात्मकता और रोचकता उत्पन्न करते है लेकिन दुरूह शब्दावली, कठिन अलंकार, अप्रचलित मुहावरों के प्रयोग से लेखक को बचना चाहिए।

4. संगीत प्रभाव—नाटक की भाँति रेडियो फीचर में विभिन्न प्रकार के संगीत व ध्वनि प्रभावों का प्रयोग किया जा सकता है किन्तु उसका उल्लेख फीचर लेखक को अपनी स्क्रिप्ट में करना पड़ता है। संगीत व ध्वनि प्रभाव रेडियो प्रसारण का सबसे प्रमुख तथा प्रभावशाली तत्त्व है। तथ्य और उसका उद्घाटन रेडियो फीचर में कितना ही रोचक क्यों न हो, संगीत के अभाव में वह विवरण मात्र रह आए। श्रोताओं को बाँधने के लिए फीचर में संगीत की सृष्टि की जाती है।

5. कथात्मकता—फीचर चाहे कैसा भी क्यों न हो, उसमें कथा तत्त्व समाहित रहता ही है। घटनाक्रम पर पूरा प्रकाश डालने के लिए फीचर को एक सूत्र में बाँधना पड़ता है। यही कथातत्त्व होता है। रेडियो फीचर में दृश्यों का अभाव होने के कारण टुकड़े-टुकड़े में बात करने से उलझन उत्पन्न हो जाती है। अतः पूरे घटना अथवा सूचना अथवा विषय को उसके प्रारम्भ, मध्य और अन्त के साथ क्रम में प्रस्तुत करना पड़ता है।

अन्त में महत्त्वपूर्ण बात रेडियो फीचर के सम्बन्ध में यह भी है कि उसमें रोचकता वृद्धि के लिए संवाद तथा साक्षात्कार इत्यादि को भी प्रयोग किया जा सकता है। प्रारम्भ में संगीत प्रभाव डालने से ही मन-मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ना शुरू हो जाता है। पूरे फीचर को नैरेशन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। नैरेशन देने वाले की आवाज में प्रभावोत्पादकता होनी चाहिए।

प्रारम्भ और अन्त किसी कविता, संवाद अथवा शायरी के साथ करने से भी फीचर को रोचक बनाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

तथा रवीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा 'गीतांजलि', 'एक नक्षत्र की आत्महत्या', 'उर्वशी' आदि तथा बिहारी लाल द्वारा 'शारदा मंगल' आदि रचनाएँ महत्वपूर्ण रही हैं।

3) बंगला काव्य की विषय वस्तु है

आधुनिक बंगला कविता में सामाजिक न्याय, पाप का विश्लेषण, वर्ग-भेद, और उसका संघर्ष, पारिवारिक संबंधों का विश्लेषण, स्त्री पुरुष का संबंध आदि उल्लेखनीय है।

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के काव्य की विशेषताएँ बताए बिना पूरी नहीं हो सकती, जिन्होंने अपनी असंख्य रचनाओं द्वारा बंगला साहित्य को समृद्ध किया। रवीन्द्रनाथ के गीत न केवल बंगला साहित्य बल्कि भारतीय साहित्य में एक बहुमूल्य धरोहर के रूप में जाने जाते हैं। इसमें इन्होंने चार प्रवृत्तियाँ डाली हैं।

(क) परमात्मा और मानवीय आत्मा का संबंध
(ख) परमात्मा और प्रकृति संबंध
(ग) प्रकृति और मानवीय आत्मा
(घ) राष्ट्रीय भावना

बंगला कवि नजरुल इस्लाम का उल्लेख

Scanned with CamScanner

... के बारे में भी कुछ भी आपत्तिजनक नहीं कहा ज

(v) किसी अन्य कम्पनी के उत्पाद संबंधी विज्ञापन को तोड़-मोड़कर उनकी नकल करके नया विज्ञापन नहीं लिखा जाना चाहिए

(vi) धर्म तथा राजनीति से संबंधित विज्ञापन का प्रसारण निषेध है। इसी प्रकार शराब, तंबाकू, जादुई इलाज, भविष्यवाणी आदि के विज्ञापनों पर भी प्रतिबंध है।

प्रश्न 5. फीचर के स्वरूप का परिचय दीजिए।

अथवा

फीचर क्या है, बताए हुए उसकी लेखन प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए। **(K.U.K.2008)**

अथवा

फीचर-लेखन की कला स्पष्ट कीजिए। ***(M.D.U.2006)***

उत्तर-फीचर—आधुनिक पत्रकारिता में मानव-रुचि का इन्द्रधनुष क्षितिज के प्रत्येक छोर को छू रहा है। फीचर-लेखन पत्रकारिता इन्द्रधनुष का एक सुन्दर रंग है। समाचार-पत्रों में भी फीचन-लेखन अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा है।

Scanned with CamScanner

फीचर का शाब्दिक अर्थ–वस्तुतः 'फीचर' शब्द लैटिन भाषा के 'फैक्चुरा' (Factura) से बना है जिसके हिन्दी में अनेक अर्थ निकलते है। सबसे पहले बी.बी.सी. में 'फीचर' नाम यथातथ्य सूचनाओं पर आधरित रचना के लिए प्रयुक्त होता रहा। तब बी.बी.सी. के विशेष कार्यक्रमों की सूचनायें समाचार-पत्रों में प्रकाशित होती थीं। जिन्हें **'फीचर्ड प्रोग्राम'** कहा जाता था। धीरे-धीरे इस शब्द से 'ड' ध्वनि या लोप हो गया और उन्हें **'फीचर प्रोग्राम'** कहा जाने लगा। शब्दकोशीय अर्थ के आधार पर फीचर का अभिप्राय नाक-नक्श, आकृति, चेहरे का सांचा माना जाता है। किन्तु पत्रकारिता के क्षेत्र में इसका अर्थ–नाटकीय कथा बनाना, प्रमुख रूप से प्रस्तुत करना, कथा-चित्र, वृत्तचित्र अथवा किसी व्यवसाय या प्रतिष्ठान से सम्बन्धित कार्यक्रम के रूप में लिया जाता है। अर्थात् जब कोई समाचार, घटना, प्रसंग, व्यक्ति चरित्र को आधार बनाकर रोचकता के साथ कलात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए व्यक्तिगत टिप्पणियों भावों व विचारों के साथ पूर्ण स्वतन्त्र होकर व्यक्त किया जाता है तो उसे फीचर कहा जाता है।

पाश्चात्य विद्वान् डेनियल आर. विलियमसन ने फीचर को इस प्रकार परिभाषित किया है–'फीचर ऐसा रचनात्मक और कुछ-कुछ स्वानुभूतिमूलक लेख है, जिसका गठन किसी घटना, स्थिति अथवा जीवन के किसी पक्ष के संबंध में पाठक का मूलतः मनोरंजन करने व सूचना देने के उद्देश्य से किया गया हो।"

डॉ. विवेकीराय के मतानुसार, **"फीचर समाचारों अथवा सूचनाओं का वैचारिक कोण से स्वस्थ स्पर्श है। वह पत्रकार द्वारा सम्पन्न ऐसा शुद्ध साहित्यिक कार्य है, जो सृजनात्मक मूल्यों से जुड़ा होता है। फीचर में सूचनात्मकता को भावात्मकता और कल्पनात्मकता का पुट देकर ऐसे प्रस्तुत किया जाता है कि मुख्य तथ्य की विश्वसनीयता और पुष्ट होती चलती है।"**

डॉ. ए.आर. इंग्वान के अनुसार, **"किसी घटना का मनोरम और विशद प्रस्तुतीकरण ही फीचर कहलाता है।"**

डॉ. संजीव भानावत के शब्दों में, **"फीचर किसी भी सामाजिक घटना की रोचक व्याख्या हो सकती है। इसमें सामयिक तथ्यों का यथेष्ट समावेश तो होता ही है, अतीत की घटनाओं तथा भविष्य की संभावनाओं से भी वह जुड़ा रहता है। समय की धड़कनें इसमें गूंजती हैं।"**

फीचर के रूप–आज 'फीचर' का तकनीकी अर्थ कथा-चित्र के रूप में लिया जाता है, परन्तु पत्रकारिता में फीचर लेखन के कई रूप मिलते हैं।

(क) संवाद-फीचर–ये फीचर किसी नवीन संवाद को आधार बनाकर लिखे जाते हैं। किसी भी प्रकाशित अथवा प्रसारित समाचार पर फीचर को अपने तर्क, विचार मर्मस्पर्शात्मक टिप्पणी के साथ प्रस्तुत कर जन-मानस का ध्यान उस संवाद की तरफ आकर्षित किया जाता है। संवाद फीचर तैयार करने में फीचर-लेखन की किसी भी ऐसी शैली को अपनाया जा सकता है, जो पाठक की रुचि को जाग्रत करती हो। कलकत्ता की स्त्री जो टैक्सी चलाती है, या दिल्ली की रिक्शा चलाने वाली युवती पर अच्छा संवाद फीचर तैयार किया गया है।

(ख) सूचना प्रधान फीचर–इस तरह के फीचर में कल्पना की उड़ान भरने की संभावना कम ही होती है। ऐसे फीचरों का उद्देश्य मनोरंजन की अपेक्षा जानकारी देना अधिक होता है। इस तरह के फीचर लिखने के लिए आवश्यक तथ्य, भेंटवार्ता, लाइब्रेरी और अपने अनुभव एकत्र किए जाते हैं। ये फीचर तथ्यपरक होते हैं। चिकित्साविज्ञान, खगोल, भूगोलशास्त्र, ज्योतिषज्ञान सामाजिक, सांस्कृतिक विषय आदि पर अधिकांशतः सूचना प्रधान फीचर बनाए जाते हैं।

(ग) व्यक्ति प्रधान फीचर–किसी के जन्मदिवस, पुण्यतिथि जैसे अवसरों पर इस प्रकार के फीचर तैयार किए जाते हैं। सामाजिक, राजनीतिक, कला व साहित्य से जुड़े बड़े व्यक्तियों, आपराधिक जगत से जुड़े व्यक्तियों के जीवन पर भी फीचर तैयार किए जाते हैं। किसी घटना-विशेष के कारण तात्कालिक प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति को लेकर भी इस प्रकार के फीचर तैयार किए जाते हैं। पिछले दिनों अनारा गुप्ता (मिस जम्मू की ब्लू फिल्म पर) काफी फीचर सभी संचार माध्यमों में दिखायी पड़े हैं।

(घ) अनुभव या उपलब्धि पर फीचर–इस तरह के फीचर सामान्य रूप से भेंटवार्ता शैली में रचे जाते हैं। ऐसे फीचर में किसी व्यक्ति के अद्भुत अनुभवों या असाधारण सफलता पर ही आधारित होने चाहिए।

इसी प्रकार साक्षात्कारपरक फीचर, समाचार फीचर, घटनापरक फीचर, यात्रापरक फीचर, खेलकूद विषयक फीचर, इतिहासपरक फीचर, स्थानीय फीचर आदि को भी फीचर के भेद माना जाता है।

रेडियो फीचर–रेडियो फीचर समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले फीचर से पृथक् विधा है। रेडियो फीचर तथ्यों और सूचनाओं को रोचकता, नाटकीयता और मनोरंजन पूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है।

रेडियो फीचर समाचार से अधिक व नाटक से कम कुछ ऐसा मिश्रित रूप है जहाँ रचनाकार की सर्जनात्मक क्षमता का पूर्ण विकास होता हुआ दिखाई देता है और जहाँ तथ्य के साथ रोचकता, सूचनाओं के साथ मनोरंजकता भी समाहित होती है।

फीचर का शाब्दिक अर्थ–वस्तुतः 'फीचर' शब्द लैटिन भाषा के 'फैक्चुरा' (Factura) से बना है जिसके हिन्दी में अनेक अर्थ निकलते है। सबसे पहले बी.बी.सी. में 'फीचर' नाम यथातथ्य सूचनाओं पर आधरित रचना के लिए प्रयुक्त होता रहा। तब बी.बी.सी. के विशेष कार्यक्रमों की सूचनायें समाचार-पत्रों में प्रकाशित होती थीं। जिन्हें **'फीचर्ड प्रोग्राम'** कहा जाता था। धीरे-धीरे इस शब्द से 'ड' ध्वनि या लोप हो गया और उन्हें 'फीचर प्रोग्राम' कहा जाने लगा। शब्दकोशीय अर्थ के आधार पर फीचर का अभिप्राय नाक-नक्श, आकृति, चेहरे का मोहरा माना जाता है। किन्तु पत्रकारिता के क्षेत्र में इसका अर्थ–नाटकीय कथा बनाना, प्रमुख रूप से प्रस्तुत करना, कथा-चित्र, वृत्तचित्र अथवा किसी व्यवसाय या प्रतिष्ठान से सम्बन्धित कार्यक्रम के रूप में लिया जाता है। अर्थात् जब कोई समाचार, घटना, प्रसंग, व्यक्ति चरित्र को आधार बनाकर रोचकता के साथ कलात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए व्यक्तिगत टिप्पणियाँ भावों व विचारों के साथ पूर्ण स्वतन्त्र होकर व्यक्त किया जाता है तो उसे फीचर कहा जाता है।

पाश्चात्य विद्वान डेनियल आर. विलियमसन ने फीचर को इस प्रकार परिभाषित किया है–'फीचर ऐसा रचनात्मक और कुछ-कुछ स्वानुभूतिपूलक लेख है, जिसका गठन किसी घटना, स्थिति अथवा जीवन के किसी पक्ष के संबंध में पाठक का मूलतः मनोरंजन करने व सूचना देने के उद्देश्य से किया गया हो।"

डॉ. विवेकीराय के मतानुसार, **"फीचर समाचारों अथवा सूचनाओं का वैचारिक कोण से स्वस्थ स्पर्श है। यह पत्रकार द्वारा सम्पन्न ऐसा शुद्ध साहित्यिक कार्य है, जो सृजनात्मक मूल्यों से जुड़ा होता है। फीचर में सूचनात्मकता को भावात्मकता और कल्पनात्मकता का पुट देकर ऐसे प्रस्तुत किया जाता है कि मुख्य तथ्य की विश्वसनीयता और पुष्ट होती चलती है।"**

डॉ. ए.आर. रंगवान के अनुसार, **"किसी घटना का मनोरम और विशद प्रस्तुतीकरण ही फीचर कहलाता है।''**

डॉ. संजीव भानावत के शब्दों में, **"फीचर किसी भी सामाजिक घटना की रोचक व्याख्या हो सकती है। इसमें सामायिक तथ्यों का यथेष्ट समावेश तो होता ही है, अतीत की घटनाओं तथा भविष्य की संभावनाओं से भी वह जुड़ा रहता है। समय की धड़कनें इसमें गूँजती है।''**

फीचर के रूप–आज 'फीचर' का तकनीकी अर्थ कथा-चित्र के रूप में लिया जाता है, परन्तु पत्रकारिता में फीचर लेखन के कई रूप मिलते हैं।

(क) संवाद-फीचर–ये फीचर किसी नवीन संवाद को आधार बनाकर लिखे जाते हैं। किसी भी प्रकाशित अथवा प्रसारित समाचार पर फीचर को अपने तर्क, विचार समीक्षात्मक टिप्पणी के साथ प्रस्तुत कर जन-मानस का ध्यान उस संवाद की तरफ आकर्षित किया जाता है। संवाद फीचर तैयार करने में फीचर-लेखन की किसी भी ऐसी शैली को अपनाया जा सकता है, जो पाठक की रुचि को जाग्रत करती हो। कलकत्ता की स्त्री जो टैक्सी चलाती है, या दिल्ली की रिक्शा चलाने वाली युवती पर अच्छा संवाद फीचर तैयार किया गया है।

(ख) सूचना प्रधान फीचर–इस तरह के फीचर में कल्पना की उड़ान भरने की संभावना कम ही होती है। ऐसे फीचरों का उद्देश्य मनोरंजन की अपेक्षा जानकारी देना अधिक होता है। इस तरह के फीचर लिखने के लिए आवश्यक तथ्य, भेंटवार्ता, लाइब्रेरी और अपने अनुभव एकत्र किए जाते हैं। ये फीचर तथ्यपरक होते है। चिकित्साविज्ञान, खगोल, भूगोलशास्त्र, ज्योतिषज्ञान सामाजिक, सांस्कृतिक विषय आदि पर अधिकांशतः सूचना प्रधान फीचर बनाए जाते हैं।

(ग) व्यक्ति प्रधान फीचर–किसी के जन्मदिवस, पुण्यतिथि जैसे अवसरों पर इस प्रकार के फीचर तैयार किए जाते हैं। सामाजिक, राजनीतिक, कला व साहित्य से जुड़े बड़े व्यक्तियों, आपराधिक जगत् से जुड़े व्यक्तियों के जीवन पर भी फीचर तैयार किए जाते हैं। किसी घटना-विशेष के कारण तात्कालिक प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति को लेकर भी इस प्रकार के फीचर तैयार किए जाते हैं। पिछले दिनों अनारा गुप्ता (मिस जम्मू की ब्लू फिल्म पर) काफी फीचर सभी संचार माध्यमों में दिखायी पड़े हैं।

(घ) अनुभव या उपलब्धि पर फीचर–इस तरह के फीचर सामान्य रूप से भेंटवार्ता शैली में रचे जाते हैं। ऐसे फीचर में किसी व्यक्ति के अद्भुत अनुभवों या असाधारण सफलता पर ही आधारित होने चाहिए।

इसी प्रकार साक्षात्कारपरक फीचर, समाचार फीचर, घटनापरक फीचर, यात्रापरक फीचर, खेलकूद विषयक फीचर, इतिहासपरक फीचर, स्थानीय फीचर आदि को भी फीचर के भेद माना जाता है।

रेडियो फीचर–रेडियो फीचर समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले फीचर से पृथक् विधा है। रेडियो फीचर तथ्यों और सूचनाओं को रोचकता, नाटकीयता और मनोरंजन पूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है।

रेडियो फीचर समाचार से अधिक व नाटक से कम कुछ ऐसा मिश्रित रूप है जहाँ रचनाकार की सर्जनात्मक क्षमता का पूर्ण विकास होता हुआ दिखाई देता है और जहाँ तथ्य के साथ रोचकता, सूचनाओं के साथ मनोरंजकता भी समाहित होती है।